अध्याय

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना पर प्रकाश डालें। इसके क्या उद्देश्य थे?

अथवा

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के जन्म की परिस्थितियों का वर्णन करें।

(What circumstances led to the birth of the Indian National Congress?)

उत्तर : 1885 ई. में भारतीय काँग्रेस की स्थापना भारतीय इतिहास की एक युगान्तकारी घटना थी। इसने भारत के राजनीतिक जीवन में एक नये युग का श्रीगणेश किया। अखिल भारतीय स्तर पर यह प्रथम राजनीतिक संगठन था। प्रारंभ में इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य प्रशासंनिक एवं संवैधानिक सुधार था। परन्तु बाद में इसने अपना प्रधान लक्ष्य भारत की पूर्ण स्वतंत्रता घोषित किया।

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना में उन तत्त्वों का हाथ था जो भारतीय राष्ट्रीय जागरण के लिए उत्तरदायी थे। कुछ विद्वानों का कहना है कि 19वीं शताब्दी के धार्मिक एवं समाज सुधार आन्दोलन ने तथा ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीति ने काँग्रेस की स्थापना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके दमनात्मक कार्य एवं नीति ने भारतीयों में जागरण एवं एकता का संचार किया तथा अँगरेजों का प्रतिकार करने के लिए एक राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की आवश्यकता का अनुभव कराया। लार्ड लिटन की प्रतिक्रियावादी नीति तथा इल्बर्ट विधेयक विवाद ने काँग्रेस की स्थापना को अवश्यम्भावी कर दिया। पाश्चात्य शिक्षा, साहित्य एवं उदारवादी विचारों ने भी काँग्रेस की स्थापना में अपना संघीय योगदान किया। भारतीय साहित्य, समाचार पत्र एवं राजनीतिक एकता तथा यातायात के विकसित साधनों ने भी काँग्रेस की स्थापना में सहायता पहुँचायी। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का जन्म एक अलग संस्था के रूप में नहीं हुआ। वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का जन्म राष्ट्रीय जागरण का स्वाभाविक परिणाम था।

अनेक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संगठनों ने भी काँग्रेस की स्थापना की पृष्ठभूमि निर्मित की। इसमें प्रमुख बंगाल का इन्डियन एसोसियेसन (Indian Association) है। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने 1876 ई. में इसकी स्थापना की थी। इसका प्रधान उद्देश्य ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक एवं साम्राज्यवादी नीति का विरोध करना था। इसके अतिरिक्त जनमत का निर्माण करना, भारत के विभिन्न वर्गों का एकीकरण, हिन्दू-मुस्लिम तथा जन आंदोलनों में किसानों का सहयोग प्राप्त करना अन्य उद्देश्य थे। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने 1883 ई. में कलकत्ता में एक राष्ट्रीय सम्मेलन (National Conference) का आयोजन किया जिसमें जनता से अपील की गई कि वे देश की उन्नति के लिए एक दृढ़ संगठन की स्थापना करें। राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा, "The objects of the National Conference were not regional but truly national. We have to talk, to deliberate, to consult, and if possible to arrive at a common programme of political action." भारतीय राजनीतिक संगठनों के इतिहास में राष्ट्रीय सम्मेलन एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। 25 दिसम्बर 1885 ई. को कलकत्ता में राष्ट्रीय सम्मेलन की

Scanned with CamScanner

एक अनुशासित सुसज्जित सेना तैयार हो सके। उसने पपत्र में पचास ऐसे व्यक्तियों की माँग की जो भले, सच्चें, निःस्वार्थ, नैतिक साहस रखने वाले और दूसरों का हित करने वाले और तीव्र भावना रखने वाले हों। उसने स्पष्ट शब्दों मे कहा, "Scattered individuals, however capable and however well meaning are powerless singly. What needed in union, organization and well-defined line of action and to secure these an association is required." शिक्षित नवयुवकों पर इस पत्र का गहरा प्रभाव पड़ा।

दिसम्बर 1884 ई. में इंडियन नेशनल यूनियन की स्थापना की गई तथा यह निश्चित किया गया कि दिसम्बर 1885 ई. में पूना में एक सभा आयोजित की जाय जिसमें भारत के सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधि शामिल हों। इस उद्देश्य से 1885 ई. में ह्यूम तथा सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के संयुक्त हस्ताक्षर से एक घोषणा पत्र जारी किया गया जिसमें कहा गया कि–

(i) राष्ट्रहित के उद्देश्य में संलग्न व्यक्तियों में परस्पर सम्पर्क स्थापित करने का अवसर प्रदान करना।

(ii) आगामी वर्षों में राजनीतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा का निश्चय तथा उन पर वाद-विवाद।

(iii) कांफ्रेंस द्वारा एक देशी संसद का बीजारोपण किया जाना।

(iv) कांफ्रेंस का आयोजन पूना में किया जाय।

उपर्युक्त कांफ्रेंस 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक पूना में होने वाली थी, किन्तु वहाँ हैजा फैल जाने के कारण इसका आयोजन पूना की जगह बम्बई में किया गया। 28 दिसम्बर 1885 ई. को बम्बई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज के विशाल भवन में इस कांफ्रेंस का आयोजन हुआ। इसमें देश के विभिन्न भागों से आये 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। काफी वाद-विवाद के बाद नई संस्था का नाम इंडियन नेशनल काँग्रेस (Indian National Congress) रखा गया। इस अधिवेशन का सभापतित्व उमेशचन्द्र बनर्जी (W. C. Banerjee) ने किया। उनके अनुसार "भारतीय इतिहास में ऐसा महत्त्वपूर्ण एवं विस्तृत सम्मेलन नहीं हुआ था।"

कुछ इतिहासकारों के अनुसार काँग्रेस की स्थापना में भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन का महत्त्वपूर्ण योगदान था। ह्यूम ने मई 1885 ई. में शिमला में डफरिन से भेंट की थी। ह्यूम के विचारों का डफरिन ने समर्थन किया तथा इस दिशा में उसे और भी प्रोत्साहित किया।

इस प्रकार लार्ड डफरिन का आशीर्वाद प्राप्त कर ह्यूम इंगलैंड गया। वहाँ लार्ड रिपन, सर जेम्स केअर्ड, जॉन ब्राइट तथा अन्य राजनीतिज्ञों से विचार विमर्श किया। इंगलैंड में एक समिति का गठन किया गया जो बाद में भारतीय संसदीय समिति (Indian Parliamentary Committee) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। किन्तु इस क्षेत्र में किये गये आधुनिक शोध इसे तथ्यहीन करार देते हुए बतलाते हैं कि डफरिन कभी भी दिल से भारत में काँग्रेस जैसी किसी संस्था के स्थापना के पक्ष में नहीं था।

Scanned with CamScanner

दूसरी बैठक हुई। इसमें जमींदारों के ब्रिटिश एसोसियेसन ने भी भाग लिया। कलकत्ता की तीन प्रमुख संस्थाओं–ब्रिटिश इंडियन, इंडियन एसोसियेसन एवं सेंट्रल मोहम्मडन एसोसियेसन ने भाग लिया। तीन से अधिक राजनीतिक संस्थाओं ने इसमें भाग लिया। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने विधान परिषदों के पुनर्गठन के लिए एक प्रस्ताव पेश किया। अस्त्र अधिनियम, सिविल सर्विस, कार्यपालिका और न्यायपालिका के पृथक्करण, सरकारी खर्च में कमी आदि ज्वलन्त विषयों पर वाद-विवाद हुआ। इंडियन एसोसियेसन ने सम्मेलन को एक स्थायी रूप देना चाहा। अतः सुरेन्द्र नाथ ने एक प्रस्ताव रखा जिसमें कहा गया कि प्रतिवर्ष देश के विभिन्न भागों से प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाया जाय। कालान्तर में भारतीय सम्मेलन भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस में सम्मिलित कर दिया गया। राष्ट्रीय सम्मेलन का अन्त हो गया। किन्तु यह भारतीय राजनीतिक संस्थाओं का आधार और अखिल भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रेरणा स्रोत बन गया।

इस सम्मेलन से प्रेरित होकर 1984 ई. में बंगाल में राष्ट्रीय संघ (National Leaguc) की स्थापना की गयी। उसी वर्ष मद्रास में महाजन सभा और 1885 ई. में बंबई महाप्रान्तीय समाज (Bombay Presidency Association) की स्थापना की गई। यद्यपि ये संस्थायें केवल सुशिक्षित वर्ग तक सीमित थीं तथा जनता से इसका कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं था, तथापि इनकी स्थापना इस बात का द्योतक था कि भारतीय एक जूट होकर राष्ट्रीय आन्दोलन का संचालन करना चाहते थे। इसके लिए वे एक अखिल भारतीय संगठन की आवश्यकता महसूस कर रहे थे। इस आवश्यकता की पूर्त्ति भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना से हुई।

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना में कतिपय महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का हाथ था। इन महान् विभूतियों में सर्वप्रथम बम्बई और कलकत्ता के वे व्यक्ति थे जो 1860 या 1870 के वर्षों में I.C.S. या वकालत पढ़ने के लिए एक-साथ लंदन जा पहुँचे थे। ऐसे व्यक्तियों में फिरोज शाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी, उमेशचन्द्र बनर्जी, मनमोहन और लाल मोहन घोष, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, आनन्दमोहन बोस और रमेश दत्त के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी लोग दादा भाई नौरोजी से काफी प्रभावित थे। इनमें से जो लोग किसी कारणवश सिविल सर्विस में अपना योगदान नहीं दे सके अनेक राजनीतिक संस्थाओं को जन्म दिया ऐसे व्यक्तियों में महादेव गोविन्द रानाडे, जी. वी. जोशी, के. टी. तैलंग, जी. सुब्रमण्यम अय्यर आदि उल्लेखनीय हैं।

परन्तु जिस व्यक्ति ने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना में महत्त्व भूमिका अदा की तथा जो वास्तव में इसका सूत्रधार था, उसका नाम एलन ओकटावियन ह्यूम (A. O. Hume) था। यह एक अवकाश प्राप्त I.C.S. अँगरेज अधिकारी था। वह दिल से भारत का कल्याण चाहता था और इसका शुभ चिन्तक था। उस समय भारत के विभिन्न भागों में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध असंतोष की ज्वाला उमड़ रही थी। विद्रोह या क्रांति की संभावना बढ़ गई थी। अतः इसका सामना करने के लिए कोई निश्चित कदम उठाना आवश्यक हो गया। 1882 ई. में ह्यूम सरकारी सेवा से मुक्त हुआ। 1 मार्च, 1883 ई. को उसने कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकों के नाम एक पत्र लिखा जिसमें उसने देश के शिक्षित नवयुवकों से मातृभूमि की उन्नति के लिए प्रयत्न करने की अपील की, ताकि भारतीय राष्ट्र का बौद्धिक, सामाजिक और राजनीतिक पुनर्जागरण हो सके और उसके लिए

Scanned with CamScanner